📘 हदियतुल अत्फाल – अली का सफर

(उदासी से सुकून तक)

एक 7 साल के बच्चे की कहानी जो नबी की हदीसों और कुरानी दुआओं से अपने दिल का सुकून ढूंढ लेता है

📖 हदीस | 🤲 दुआ | ❓ क्विज़

फ्री ई-बुक – सवाब के लिए शेयर करें

📄 पेज 1 – कहानी की शुरुआत

अली 7 साल का था। वह स्कूल से आकर अपने कमरे में जाकर बैठ जाता। न खेलने का दिल करता, न किसी से बात करने का।

उसकी अम्मी ने पूछा: "बेटा, क्या हुआ? आज भी उदास हो?"

अली ने आँखें झुकाकर कहा: "अम्मी, मुझे कुछ समझ नहीं आता। मेरा दिल उदास रहता है। मेरा मकसद क्या है? मैं क्यों ज़िंदा हूँ?"

अम्मी को समझ नहीं आती थी। अली बहुत सोचता – लेकिन जवाब नहीं मिलता। रोज़ का यही हाल था।

📌 टीज़र: क्या अली को कभी जवाब मिलेगा? आगे पढ़िए...

📄 पेज 2 – वालिद ने अली का दर्द देखा

एक रात अली अपने तकिए में रो रहा था। वालिद (अब्बू) ने सुना और अंदर आए। उन्होंने प्यार से अली के कंधे पर हाथ रखा।

वालिद (अब्बू): "बेटा, क्या बात है? मुझे बताओ – मैं हूँ ना।"

अली ने सारी बात बता दी। वह रोता रहा: "अब्बू, मुझे सुकून नहीं मिलता। कोई चीज़ मुझे खुश नहीं रखती। दिल में खाली खाली सी फीलिंग रहती है।"

वालिद ने उसे अपने सीने से लगाया। फिर प्यार से कहा:

वालिद (अब्बू): "बेटा, तेरा जवाब सिर्फ उन में है – जो अल्लाह के आखिरी रसूल हैं। मैं तुझे एक खास किताब देता हूँ। उसे रोज़ पढ़ना। इंशाअल्लाह तुझे सब कुछ मिल जाएगा।"

📌 टीज़र: वह क्या किताब होगी? अगले पेज में जानिए...

📄 पेज 3 – वालिद ने किताब दी

अगले दिन सुबह – वालिद ने अली को एक खूबसूरत किताब दी। उसकी जिल्द पर सुनहरे हरफ़ों में लिखा था:

"हदियतुल अत्फाल"

वालिद (अब्बू): "इस किताब में नबी (ﷺ) की हदीसें हैं और दुआएँ हैं। रोज़ एक हदीस और एक दुआ पढ़ना। देखना – तेरा दिल कैसे बदलना शुरू हो जाएगा!"

अली ने किताब ली। उसके चेहरे पर पहली बार बहुत दिनों बाद एक हल्की सी मुस्कुराहट आई। उसने खुशी से किताब खोली।

अब इस किताब से हदीसें और दुआएँ शुरू होती हैं! हर पेज पर एक नया सबक – एक नया सुकून।

📄 पेज 4 – पहली हदीस और पहली दुआ

अली ने पहला पेज खोला। उसपर लिखा था:

हदीस 1:

"मोमिन की मिसाल एक नरम ताज़े पौधे की तरह है – हवा जो भी उस पर लाए, उसे झुका देती है, फिर वह सीधा हो जाता है। और फाजिर (बुरा आदमी) सरू के दरख्त की तरह है – जो सिर्फ टूट कर गिरता है।"
📚 सहीह बुखारी 5644 | सहीह मुस्लिम 2809

अली ने सोचा: "मतलब... अगर मैं मोमिन हूँ तो मुश्किलों में भी नहीं टूटूंगा? मैं झुक सकता हूँ – लेकिन टूटा नहीं!"

दुआ #1 – ज़रूरत के वक्त

अरबी (सही):
رَبِّ إِنِّي لِمَا أَنزَلْتَ إِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيرٌ

रोमन उर्दू: रब्बी इन्नी लिमा अंज़ल्ता इलय्या मिन ख़ैरिन फ़क़ीर

तर्जुमा: "ऐ मेरे रब! जो भी भलाई तू मुझे दे, मैं उसका मोहताज हूँ।"
📚 सूरह अल-कसस, आयत 24

कब पढ़नी है? जब आपको किसी चीज़ की ज़रूरत हो – रिज़्क, काम, इल्म, या दिल का सुकून।

अली ने यह दुआ पढ़ी और महसूस किया – थोड़ा सुकून मिला।

📌 टीज़र: क्या यह सुकून बाकी रहेगा? आगे पढ़िए...

📄 पेज 5 – दूसरा दिन: नई हदीस और दुआ

अगले दिन अली ने दूसरा पेज खोला।

हदीस 2:

"मुसलमान वह है जिसकी ज़बान और हाथ से दूसरे मुसलमान महफ़ूज़ रहें।"
📚 सहीह बुखारी | सहीह मुस्लिम

अली ने सोचा: "मतलब मैं अपनी ज़बान से किसी को तकलीफ नहीं दूंगा – न गाली, न झूठ, न चुगली!"

दुआ #2 – ग़म और उदासी के लिए

अरबी (सही):
اللَّهُمَّ إِنِّي أَعُذُ بِكَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحَزَنِ

रोमन उर्दू: अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल हम्मि वल हज़न

तर्जुमा: "ऐ अल्लाह! मैं हर ग़म और उदासी से तेरी पनाह माँगता हूँ।"
📚 सहीह बुखारी 6342

कब पढ़नी है? सुबह और शाम – और जब भी दिल ग़मगीन हो।

अली ने यह दुआ 3 बार पढ़ी। उसे लगा जैसे कोई बोझ हल्का हो रहा है।

❓ क्विज़ – सवाल 1

पहली हदीस में मोमिन की मिसाल किस चीज़ से दी गई?
(क) सख्त दरख्त से
(ख) नरम ताज़े पौधे से
(ग) बड़े पहाड़ से

जवाब आखिरी पेज में मिलेगा।

📌 टीज़र: अली दुआ पढ़कर सो गया। सुबह क्या होगा? आगे जानिए...

📄 पेज 6 – अली बदलता गया

अली रोज़ किताब पढ़ता। हदीस पढ़ता, दुआ पढ़ता, और अल्लाह से मदद माँगता।

एक दिन उसकी अम्मी ने देखा – अली खुद बैठकर दुआ कर रहा है और रो रहा है। लेकिन यह रोना ग़म का नहीं था – यह अल्लाह के करीब होने का आँसू था।

हदीस 3:

"जो शख्स सुबह और शाम यह 7 बार कहे – तो अल्लाह उसकी दुनिया और आखिरत की परेशानी दूर कर देता है।"
📚 अबू दाऊद 5081 | इब्न अस-सुन्नी 71

दुआ (हस्बियल्लाह):
حَسْبِيَ اللَّهُ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيمِ

रोमन उर्दू: हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा, अलैहि तवक्कल्तु व हुवा रब्बुल अर्शिल अज़ीम

दुआ #3 – ज़िंदगी का मकसद

अरबी:
رَبَّنَا آتِنَا فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً وَفِي الْآخِرَةِ حَسَنَةً وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ

रोमन उर्दू: रब्बना आतिना फिद दुन्या हसनतन व फिल आखिरति हसनतन व क़िना अज़ाबन नार

तर्जुमा: "ऐ रब! हमें दुनिया में भी भलाई दे और आखिरत में भी भलाई दे, और हमें दोज़ख के अज़ाब से बचा।"
📚 सूरह बकराह, आयत 201

कब पढ़ें? हर नमाज़ के बाद – और जब भी अपनी ज़िंदगी का मकसद याद करना हो।

अली को अब समझ आ गया – उसका मकसद दुनिया और आखिरत दोनों की भलाई हासिल करना है – और अल्लाह को राज़ी करना है!

❓ क्विज़ – सवाल 2

"हस्बियल्लाहु ला इलाहा इल्ला हुवा..." यह दुआ पढ़ने से क्या होता है?
(क) आदमी अमीर बन जाता है
(ख) परेशानी दूर होती है
(ग) लंबी उमर मिलती है

जवाब आखिरी पेज में।

📄 पेज 7 – टर्निंग पॉइंट

एक दिन स्कूल में एक लड़के ने अली को तंग किया। अली को गुस्सा आया – लेकिन उसी वक़्त उसे हदीस याद आई:

हदीस 4 (गुस्से के बारे में):

"गुस्सा मत करो।"
📚 सहीह बुखारी

अली ने अपनी ज़बान रोक ली। उसने वह लड़का कुछ नहीं कहा जो गुस्से में कहना चाहता था। उसके दिल में सुकून था।

रात को उसने दुआ #2 पढ़ी: "अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु बिका मिनल हम्मि वल हज़न..." – और वह चैन से सो गया।

सुबह उठा तो महसूस किया – वह अब पहले जैसा उदास नहीं था। वह मुस्कुरा रहा था!

❓ क्विज़ – सवाल 3

दुआ #3 (रब्बना आतिना...) किस चीज़ के लिए पढ़ी जाती है?
(क) सिर्फ दुनिया के लिए
(ख) सिर्फ आखिरत के लिए
(ग) दुनिया और आखिरत दोनों के लिए

❓ क्विज़ – सवाल 4

"गुस्सा मत करो" यह किसने फरमाया?
(क) किसी बुज़ुर्ग ने
(ख) नबी मुहम्मद (ﷺ) ने
(ग) फरिश्ते ने

जवाब आखिरी पेज में।

📄 पेज 8 – अली को उसका मकसद मिल गया

अली किताब खत्म कर चुका था। वह वालिद के पास गया और मुस्कुराकर बोला:

अली: "अब्बू, अब मैं समझ गया! मेरा मकसद सिर्फ खुश रहना नहीं – बल्कि अल्लाह के बंदों की मदद करना, अच्छा इंसान बनना, और अल्लाह से दुआ करना है!"

वालिद ने उसे गले लगाया और आँखों में आँसू आ गए:

वालिद (अब्बू): "माशाअल्लाह, बेटा! तूने वह पा लिया जिसके लिए यह किताब थी। अल्लाह तुम्हारा दिल हमेशा रौशन रखे। आमीन।"

कहानी का अंत:
अली अब खुश है। वह जब भी उदास होता है – हदीस पढ़ता है, दुआ करता है। और अल्लाह उसे सुकून देता है।

और तुम भी कर सकते हो! रोज़ एक हदीस – रोज़ एक दुआ। इंशाअल्लाह!

📄 पेज 9 – एक्टिविटी पेज

✏️ अपनी पसंदीदा दुआ लिखो:

📖 एक हदीस लिखो जो तुम्हें याद हो:

💭 अली के सफर से तुमने क्या सीखा?

🎨 एक मुस्कुराता हुआ चेहरा बनाओ:

(यहाँ बच्चे अपना चेहरा बना सकते हैं)

📄 पेज 10 – एंड पेज: क्विज़ के जवाब + तफसील

✅ क्विज़ के सही जवाब

सवाल	सही जवाब
1. मोमिन की मिसाल?	(ख) नरम पौधा
2. हस्बियल्लाहु पढ़ने से?	(ख) परेशानी दूर होती है
3. दुआ #3 किस लिए?	(ग) दुनिया और आखिरत दोनों
4. "गुस्सा मत करो" किसने कहा?	(ख) नबी (ﷺ) ने

📜 हदीसों की आसान तफसील

हदीस 1 (पौधा): मोमिन मुश्किलों में झुक जाता है लेकिन टूटता नहीं। सब्र और तवक्कुल उसकी ताकत है।

हदीस 2 (ज़बान और हाथ): सच्चा मुसलमान दूसरों के लिए अमन का सबब है। गाली, झूठ और चुगली से बचो।

हदीस 3 (हस्बियल्लाहु): अल्लाह काफी है। सुबह शाम 7 बार पढ़ने से अल्लाह दुनिया और आखिरत की हर परेशानी दूर करता है।

हदीस 4 (गुस्सा मत करो): गुस्सा शैतान से आता है। खामोशी और दुआ गुस्सा ठंडा कर देती है।

🤲 दुआओं की आसान तफसील

दुआ 1 (ज़रूरत): रब्बी इन्नी लिमा अंज़ल्ता... – जब कुछ चाहिए, अल्लाह बेहतर नसीब करता है।

दुआ 2 (ग़म दूर करने वाली): अल्लाहुम्मा इन्नी अऊज़ु... – सुबह शाम पढ़ो, अल्लाह ग़म दूर करता है।

दुआ 3 (दुनिया और आखिरत): रब्बना आतिना... – हर नमाज़ के बाद पढ़ो, दुनिया और आखिरत दोनों की कामयाबी के लिए।

दुआ 4 (हस्बियल्लाहु): सुबह 7 बार, शाम 7 बार पढ़ो – अल्लाह हर परेशानी से बचाता है।

📄 पेज 11 – हम ऐसे शेयर करते हैं (शेयरिंग गाइड)

इस किताब को मुफ्त कैसे शेयर करें

आप यह ई-बुक किसी भी तरह मुफ्त में शेयर कर सकते हैं। सवाब के लिए आगे भेजें।

✅ शेयर करने के तरीके:

1. व्हाट्सएप – अपने स्टेटस पर PDF लिंक डालें, फैमिली और इस्लामिक ग्रुप्स में भेजें।
2. फेसबुक – "इस्लामिक बुक्स फॉर किड्स" ग्रुप्स में पोस्ट करें।
3. गूगल ड्राइव – PDF अपलोड करें, "एनीवन विद लिंक कैन व्यू" करें, लिंक शेयर करें।
4. मस्जिद या मदरसा – प्रिंटआउट निकालकर बच्चों को मुफ्त में बाँट दें।
5. क्यूआर कोड – PDF लिंक का QR कोड बनाकर व्हाट्सएप स्टेटस पर लगाएँ – लोग स्कैन करके तुरंत डाउनलोड कर लें।

⚠️ नोट: यह किताब सिर्फ मुफ्त शेयर करने के लिए है। किसी भी तरह इसे बेचना या पैसे लेना जायज़ नहीं।

🤲 दुआ: अल्लाह इस किताब को हर उस बच्चे तक पहुँचाए जो उदास है और सुकून ढूंढ रहा है। आमीन।

📄 पेज 12 – समाप्त

अल्हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन
الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ